भारतीय क्रांति के सांचोपांजा

यह एक सर्वमान्य सत्य है कि भारत का क्रांतिकारी आंदोलन टूट-फूट व बिखराव का शिकार है। '70 के दशक में शुरू हुआ यह टूट-फूट व बिखराव का सिलसिला आज भी जारी है। हां, इस बीच भारत का क्रांतिकारी शिविर एकता के सवाल को लगातार कार्यसूची में लेकर हल करने के प्रयास करता रहा है और इसके नतीजे कम्युनिस्ट क्रांतिकारी शिविर के भारत की मुख्यधारा में लगातार मौजूदगी और पूंजीपतियों की राजसत्ता को चुनौती देने के रूप में हमारे सामने हैं। भारत में कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन की यह मौजूदगी '80 के दशक में शिविर के घटक संगठनों के पुनर्संगठन को लेकर किए गए गंभीर प्रयासों और जनता के बीच लगातार की जाने वाली राजनीतिक कार्रवाहियों की बदौलत ही है। हालांकि भारत के कम्युनिस्ट क्रांतिकारी शिविर के समक्ष मौजूद चुनौतियों की तुलना में '80 के दशक के बाद शिविर का पुनर्संगठन नाकाफी है मगर संतोषजनक बात यह है कि शिविर के ज्यादातर संगठन पुनर्संगठन की इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाकर अखिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के गठन के कार्यभार को महत्वपूर्ण कार्यभार के रूप में स्वीकार करते हैं। इसका दूसरा पहलू यह भी है कि अधिकांश संगठन व्यवहार में इस दिशा में ठोस व गंभीर प्रयास करते नहीं दिखाई देते।

अलग-अलग कम्युनिस्ट क्रांतिकारी संगठनों की कम्युनिस्ट क्रांतिकारी शिविर की परिभाषा अलग-अलग होने व शिविर की एकता सम्बन्धी भिन्न पहुंच ही अखिल भारतीय पार्टी के गठन सम्बन्धी उनके व्यवहार को तय करती है। इस सबके बावजूद शिविर में पुनर्संगठन के गम्भीर प्रयास हुए हैं और हो रहे हैं, हालांकि यह अपर्याप्त है।

शिविर के घटक संगठन के रूप में हमारा भी यही मानना है कि आज अखिल भारतीय पार्टी का निर्माण ही हमारा केन्द्रीय कार्यभार है और हमारी सभी कार्रवाइयां इस ओर लक्षित होनी चाहिये। हमने इस दिशा में ठोस प्रयास करने की इच्छा से 'भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.) ' के सभी घटक संगठनों को एकता प्रक्रिया शुरू करने का प्रस्ताव दिया था (इसकी विस्तृत जानकारी हम 'लाल-सलाम' के अंक-6 में आंदोलन के सामने रख चुके हैं)

हमारे द्वारा रखे गए इस 'एकता-प्रस्ताव' की प्रतिक्रिया या कह लीजिये की बौखलाहट में 'क्रांतिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत' की एक नायाब व मौलिक अवस्थिति खुलकर सामने आयी है। इस लेख में हम इस अवस्थिति का खुलासा करेंगे। हमारे इस प्रयास की एक सीमा है- क्योंकि 'क्रांतिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत' (जो शिविर के घटक पार्टी संगठनों की औपचारिक अवस्थितियों की अपने जन-अखबार में धज्जियां उड़ाने के लिए कुख्यात है) ने अपनी स्थापना से लेकर अब तक पार्टी सम्मेलन करना तो दूर 1990 में भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.) से अलग होने सम्बन्धी फूट के दस्तावेज के अलावा किसी किस्म का कोई औपचारिक दस्तावेज तक जारी नहीं किया है। फिर भी 15 जुलाई, 2003 को हमसे हुयी एकमात्र वार्ता के बाद हमें लिखे गए उनके 17 जुलाई,

के एकमात्र औपचारिक अवस्थिति पत्र , जो उन्होंने 'एकता वार्ता' के बारे में अपनी पहुंच के खुलासे के लिए दिया था तथा 'क्रांतिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत' की अनौपचारिक अवस्थितियां पर्याप्त हैं।

> ''हमारा यह मानना है कि आज कम्युनिस्ट क्रांतिकारी संगठनों के बीच कोई स्वस्थ एवं सार्थक राजनीतिक वाद-विवाद चलने की सम्भावनाएं अत्यंत क्षीण हो गयी हैं। इसका प्रमुख बुनियादी कारण यह है कि अधिकांश संगठनों का संघटन (composition) ही बोल्शेविक नहीं रह गया है। एक लम्बे समय से गैर सर्वहारा सांगठनिक लाइन के अमल के कारण यह स्थिति उत्पन्न हुयी है। इसलिए कम्युनिस्ट क्रांतिकारी संगठनों के बीच राजनीतिक वाद-विवाद (polimic) के जरिये एक सर्वभारतीय पार्टी के गठन (formation) की सम्भावना हमें नजर नहीं आती'' (केन्द्रीय सांगठनिक कोर (प्राविजनल) , क्रांतिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत व पुनर्गठन कमेटी भा. क.ली (मा.ले.) के बीच बातचीत के दौरान क्रा.क.ली., भारत के प्रतिनिधियों द्वारा प्रस्तुत अवस्थिति, पृष्ठ-2)

'क्रांतिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत' की इस नायाब प्रस्थापना के बारे में हमारा पहला सवाल यह है कि 1990 से लगभग 2002 तक आप भारत में कम्युनिस्ट क्रांतिकारी शिविर की मौजूदगी और शिविर के पुनर्गठन को अपना दायित्व मानते रहे हैं। 1990 में आपके द्वारा जारी फूट का दस्तावेज तो शिविर के पुनर्संगठन द्वारा पार्टी गठन के कार्यभार को अपना कार्यभार बताता ही है। इसके बाद 2003 आते-आते ऐसे कौन से बदलाव हैं जो आपकी 1990 की अवस्थिति में बदलाव का कारण बनते हैं? जाहिर है 'क्रांतिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत के पास इस सवाल का कोई ठोस जवाब नहीं है। हम इस आलेख में आगे इस सवाल को हल करने की कोशिश करेंगे।

मार्च, 2003 में भारत के इस 'स्वयंभू' इकलौते क्रांतिकारी संगठन ने अपनी 'अनौपचारिक -औपचारिक' अवस्थिति का खुलासा किया कि कम्युनिस्ट क्रांतिकारी शिविर आज विघटन के मुकाम पर खड़ा है। मार्च, 2003 में क्रांतिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत ने कहा कि 'हमें इस कड़वी सच्चाई को स्वीकार करना होगा कि विगत तीन दशकों से लगातार बिखराव का शिकार कम्युनिस्ट क्रांतिकारी शिविर आज विघटन के मुकाम पर खड़ा है'। यानि मार्च, 2003 तक यह पार्टी संगठन मानता रहा है कि कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन मौजूद है और विघटित होने के मुकाम पर खड़ा है इस घोषणा के लिए जिन भटकावों व विच्युतियों की चर्चा की गयी है ,वे भटकाव व विच्युतियां कोई नयी नहीं हैं और '70 के दशक से ही कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन में मौजूद रही हैं फिर क्या है जो आपकी 1990 तक की अपनी अवस्थिति को बदलने का आधार बनता है। यह सवाल 'क्रांतिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत' के लिये महत्वपूर्ण नहीं बनता या यूं कहा जाय कि यह पार्टी संगठन इस सवाल को सिरे से नजरअंदाज करता है क्योंकि आप जैसे ही इस सवाल का जवाब देने का प्रयास करेंगे वह जवाब खुद आपके ऊपर ढेरों सवाल खड़े कर देगा।

अभी मार्च, 2003 की अपनी अवस्थिति को 'क्रांतिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत' शायद खुद भी पचा नहीं पाया था कि मई, 2003 में इस पार्टी संगठन ने दो कदम आगे बढ़कर कम्युनिस्ट क्रांतिकारी शिविर के विघटन की घोषणा कर दी। इसने कहना शुरू किया कि 'भारत में अब तक जिसे कम्युनिस्ट क्रांतिकारी शिविर कहा जाता रहा है, वह मूलत: व मुख्यत: विघटित हो चुका है'। यानि मार्च, 2003 तक विघटन के कगार पर खड़ा कम्युनिस्ट क्रांतिकारी शिविर दो माह में विघटित हो गया। इन दो महीनों में कम-से-कम हमें तो शिविर में ऐसा कोई मार्के का बदलाव नजर नहीं

आता जो विघटन की इस तथाकथित प्रक्रिया के मुकम्मल हो जाने का कारण बनता हो। 'क्रांतिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत' उसके कारणों की चर्चा करते हुए कहती है कि

> 'भारत के अधिकांश कम्युनिस्ट क्रांतिकारी गुपों-संगठनों के कमजोर विचारधारात्मक आधार, गलत सांगठनिक कार्यशैली और गलत कार्यक्रम पर अमल की आधी-अधूरी कोशिशें के लम्बे सिलसिले ने आज उन्हें इस मुकाम पर ला खड़ा किया है।'

क्योंकि यह छिछोरी घोषणा करते वक्त 'क्रांतिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत' अपनी 1990 तक की कम्युनिस्ट क्रांतिकारी शिविर की मौजूदगी की स्वीकारोक्ति की कोई आत्मालोचना प्रस्तुत नहीं करती है तब हमारा यह मानना लाजिमी है कि वह अपनी 1990 तक की अवस्थिति को ठीक समझती है। हम पूछना चाहेंगे कि अधिकांश क्रांतिकारी ग्रुपों -संगठनों के विचारधारात्मक आधार, सांगठनिक कार्यशैली व कार्यक्रम में 1990 से मार्च, 2003 व मई, 2003 के बीच कौन से मात्रात्मक व गुणात्मक बदलाव आये हैं और इन बदलावों की प्रकृति क्या है? हमारा मानना है कि बदलाव निश्चित तौर पर आए हैं और इन बदलावों की प्रकृति मूलतः सकारात्मक है। 1990 से 2003 के दौरान कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन के ज्यादातर घटक ग्रुप व संगठन विचारधारात्मक रूप से और ज्यादा परिपक्व हुए हैं। अधिकांश पार्टी संगठनों ने मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओ विचारधारा के सारतत्व को ज्यादा गहराई से आत्मसात करने के साथ-साथ अधिकांश पार्टी संगठनों ने विश्व साम्राज्यवाद व भारतीय समाज व्यवस्था के चरित्र में आए बदलावों को भी किसी ने किसी रूप में किन्तु-परन्तु के विशेषणों के साथ ही सही मगर स्वीकार किया है। ऐसे में अधिकांश ग्रुपों-संगठनों की सांगठनिक कार्यशैली व कार्यक्रमों में आए बदलाव भी '70 के दशक की तुलना में ज्यादा सकारात्मक हैं। आज ज्यादातर पार्टी संगठन भारतीय समाज में आए बदलावों को ज्यादा बेहतर तरीके से चिह्नित कर रहे हैं। हालांकि इस दौरान शिविर के कुछ संगठन दक्षिणपंथी भटकाव का शिकार भी हुए हैं।

यहां इस तथ्य को भी संज्ञान में ले लेना जरूरी है कि 'क्रांतिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत' ने भारतीय कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन के विघटन की घोषणा करने वाली अपनी मई, 2003 की थीसिस को 1997-98 में ही अपने गर्भ में धारण कर लिया था मगर तब इसमें अन्य क्रांतिकारी ग्रुपों की मौजूदगी को स्वीकार किया गया था। 1997-98 में ही इस पार्टी संगठन ने कहना शुरू किया कि

> 'कम्युनिस्ट क्रांतिकारी शिविर में टूट-फूट के लम्बे सिलसिले के कारण परिधिगत नहीं बल्कि बुनियादी हैं। इन कारणों की सुसंगत समझदारी के आधार पर ही अखिल भारतीय स्तर पर नये सिरे से सर्वहारा वर्ग की एक क्रांतिकारी पार्टी के गठन और निर्माण की प्रक्रिया शुरू की जा सकती है'।

1997-98 में इस पार्टी संगठन ने विचारधारा, कार्यक्रम और सांगठनिक कार्यशैली को कम्युनिस्ट क्रांतिकारी शिविर की टूट-फूट के बुनियादी कारण बताते हुए दबे-छिपे रूप में शिविर के विघटन की चर्चा की थी। मगर तब 'इस नये दौर में नये सिरे से पार्टी-निर्माण व पार्टी-गठन की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने' का जो नुस्खा प्रस्तुत किया था वह शिविर की मौजूदगी को स्वीकार करता था।

1997-98 में 'क्रांतिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत' ने ईस्क्रा सरीखे मजदूर अखबार की भूमिका और औद्योगिक सर्वहारा वर्ग के बीच से पार्टी भर्ती पर जोर देते हुए कहा था

> 'पार्टी गठन की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए संजीदगी के साथ सामाजिक प्रयोगों में लगे क्रांतिकारी ग्रुपों के बीच संवाद-बहस और एकता की प्रक्रिया को आगे बढ़ाना जरूरी है।'

इस तरह यह साफ दिखायी देता है कि 'क्रांतिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत' की यह अवस्थिति उनकी 1990 की अवस्थिति के ज्यादा करीब है बावजूद इसके कि 1997-98 में भी शिविर के ऊपर प्रकारान्तर से कई सवाल उठाये गये। आज जब यह संगठन कहता है कि

> 'आज अव्वल न तो विचारधारा और कार्यक्रम के विभिन्न प्रश्नों पर बहस-मुबाहिसे से एकता कायम होने की स्थिति ही नहीं दीखती और यदि यह हो भी जाये तो एक सर्वभारतीय क्रांतिकारी सर्वहारा पार्टी नहीं बन सकती क्योंकि कुल मिलाकर, घटक संगठनों-ग्रुपों के बोल्शेविक चरित्र पर ही सवाल उठ खड़ा हुआ है'

तो इसके नेतृत्व का यह क्रांतिकारी दायित्व बनता है कि कम्युनिस्ट क्रांतिकारी शिविर के विघटन व गैर बोल्शेविकीकरण की घोषणा को कम-से-कम अपने किसी औपचारिक पार्टी प्लेटफार्म से घोषित करें ही। किसी नियमित या अनियमित प्लेटफार्म की गैर मौजूदगी में किसी पहले व अंतिम सर्कुलर के जरिए ही आप उस आंदोलन को संबोधित कर सकते हैं जिसका कि आप हिस्सा रहे हैं। हम आपके इस तर्क को कतई स्वीकार नहीं कर सकते कि आपकी क्षमतायें व सीमायें इस दायित्व के आड़े आ रही हैं। क्योंकि गैर पार्टी लेखन में आप माहिर हैं और बुर्जुआ साहित्यिक प्रतिष्ठानों के लिये रचनाकर्म भी आपके महत्वपूर्ण कामकाज का हिस्सा है। खैर..आप ऐसा नहीं करेंगे क्योंकि एक बार औपचारिक पार्टी अवस्थिति जारी करने के बाद पैदा होने वाले वाद -विवाद से आप किंतु -परन्तु कहकर पल्ला नहीं झाड़ सकेंगे। और यह कि ऐसा करने के लिए आपको जो पार्टी-कर्म करना होगा उसकी आपको अब आदत नहीं रही।

आप यह अच्छी तरह जानते हैं कि पार्टी-प्लेटफार्म से शिविर के विघटन की घोषणा करने के बाद आपको कई सवालों और चुनौतियों से रूबरू होना होगा। मसलन 'क्रांतिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत' को इस सवाल का जवाब देना होगा कि 1990-97 की आपकी अवस्थिति का आधार क्या था? विचारधारा, कार्यक्रम व सांगठनिक कार्यशैली के वह कौन से कारक थे जो तब कम्युनिस्ट क्रांतिकारी शिविर को मूलत: बोल्शेविक चरित्र प्रदान करते थे और 1990 से 2003 के दौरान उनमें कौन से बदलाव आये हैं? अगर हमारा यह इकलौता स्वयंभू क्रांतिकारी पार्टी संगठन इस सवाल का जवाब देने की कोशिश करता भी है तो उसे एक अन्य डरावने सवाल से जूझना होगा कि यह पार्टी संगठन समूचे शिविर के इस 'पतन के गर्त' में डूबने का मूक दर्शक क्यों बना रहा ? और 'पालिमिक्स नामधारी तू-तू मैं-मैं' में उसका खुद का योगदान क्या रहा? जाहिरा तौर पर यहां यह कहना आत्मघाती होगा कि इस दौरान भारत के साहित्यप्रेमियों को उच्च कोटि का विश्व साहित्य उपलब्ध करवाना इंकलाबियों की कार्यसूची में प्राथमिक महत्व ग्रहण कर गया था। हमारा यह साफ आरोप है कि 'क्रांतिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत' जिन तीन बुनियादी कारणों- विचारधारा, कार्यक्रम व सांगठनिक कार्यशैली पर गलत पहुंच- को शिविर के विघटन के लिए जिम्मेदार मानती है। उन कारणों पर आंदोलन के बीच औपचारिक बहस चलाने में इस पार्टी संगठन ने कोई मेहनत नहीं की

है। औपचारिक वाद-विवाद का प्रयास तो दूर इस पार्टी-संगठन ने इन सवालों पर कोई सारगर्भित लेख भी अपनी पैदाइश के बाद से आज तक आंदोलन के बीच रखने का प्रयास नहीं किया है। और आज जब आप कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन के विघटन की घोषणा कर रहे हैं तब भी आप बुर्जुआ प्रतिष्ठानों से सांठ-गांठ करके विश्व साहित्य के पुनर्प्रकाशन को व्यवहार में अपना केन्द्रीय कार्यभार बनाए हुए हैं जबकि खुद आपके अनुसार अब भारतीय क्रांति का भविष्य सिर्फ आपके ही कंधों पर टिका हुआ है। 'क्रांतिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत' के हमारे साथी फरमाते हैं :

> 'भारत के अधिकांश कम्युनिस्ट क्रांतिकारी ग्रुपों-संगठनों के कमजोर विचारधारात्मक आधार, गलत सांगठनिक कार्यशैली और गलत कार्यक्रम पर अमल की आधी-अधूरी कोशिशों के लम्बे सिलसिले ने आज उन्हें इस मुकाम पर ला खड़ा किया है कि उनके सामने पार्टी पुनर्गठन का नहीं, बल्कि नये सिरे से पार्टी-निर्माण का प्रश्न केन्द्रीय हो गया है।'

अगर इसे सच मान लिया जाय तो यह इतिहास का सर्वहारा वर्ग के साथ मजाक ही होगा। क्योंकि अब सर्वभारतीय पार्टी के निर्माण का कार्यभार 'क्रांतिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत' के कंधों पर है। जब सर्वभारतीय पार्टी-गठन का कार्यभार आपके कंधों पर था तब आप हाथ पर हाथ रखकर पार्टी गठन की सम्भावनाओं को खत्म होते देखते रहे। और जब सम्भावनाएं खत्म हो गयीं तब आप पार्टी-निर्माण के अपने द्वारा ओढ़ लिये गए कार्यभार को पूरा करने की दिशा में लेश-मात्र प्रयास करने के बजाय 'स्वत:स्फूर्तता' की थीसिस गढ़ने में व्यस्त हैं।

आप फरमाते हैं

> 'आज भी क्रांतिकारी कतारों का सबसे बड़ा हिस्सा मा.-ले. ग्रुपों-संगठनों के तहत ही संगठित है। यानी कतारों का कम्पोजिशन (संघटन) क्रांतिकारी है, लेकिन नीतियों का कम्पोजिशन (संघटन) शुरू से ही गलत रहा है। इन्हीं नीतियों के वाहक नेतृत्व का कम्पोजिशन ज्यादातर संगठनों में आज अवसरवादी हो चुका है'।

इसके बाद आप इन गैर बोल्शेविक संगठनों की बोल्शेविक कतारों का अह्वान करते हैं :

> 'भारतवर्ष में क्रांतिकारियों की जो नयी पीढ़ी इस सच्चाई की आंखों में आंखे डालकर खड़े होने का साहस जुटा सकेगी, वही नई सर्वहारा क्रांतियों के वाहक तथा नई बोल्शेविक पार्टी के घटक बनने वाले क्रांतिकारी केंद्रों के निर्माण का काम हाथ में ले सकेगी'।

द्वंद्ववाद का ऐसा नायाब नमूना देखकर मार्क्स भी शरमा जायें। पिछले तीस सालों से गलत नीतियों पर चलकर विघटित हो चुके कम्युनिस्ट क्रांतिकारी शिविर की क्रांतिकारी कतारें? धन्य है! वह नेतृत्व जो तीस सालों में खुद अपने बचे-खुचे बोल्शेविक चरित्र को नहीं बचा सका मगर उसने कतारों के बोल्शेविक चरित्र का हरण नहीं होने दिया। धन्य है! वह नीतियां जिन्होंने अपना गलत प्रभाव कतारों पर नहीं डाला। और जय-जयकार हो आपकी अपनी इस द्वंद्वात्मक पद्धति से आप संघी नेकरधारियों की कतारों के बीच से भी क्रांतिकारी ढूंढ सकते हैं। मगर हम पापियों को एक चिंता व्यर्थ ही चिंतित कर रही है, जब ये नयी पीढ़ी इस सच्चाई की आंखों में आंखें डालकर खड़े होने का साहस करेगी तो उनके हाथ बिल्कुल खाली होंगे और दिमाग में सवाल, आपने अभी तक सही विचारधारा, सही कार्यक्रम, सही सांगठनिक लाइन का तो सृजन ही नहीं किया है। अगर आपके

दिमाग में है तो अभी आप पार्टी-निर्माण व पार्टी-गठन सम्बन्धी अपनी समग्र समझ प्रस्तुत ही नहीं कर रहे हैं। आप हमारी इस चिंता के लिए हमें माफ करेंगे क्योंकि हम स्वत:स्फूर्तता पर भरोसा नहीं करते।

अब..., आप इससे भी आगे बढ़कर अपनी इस स्वत:स्फूर्तता की मौलिक थीसिस की लेनिन के मुंह में घुसेड़ देते हैं

> 'एकता बुद्धिजीवी ग्रुपों की सदिच्छाओं सदभावनाओं से मुमकिन नहीं, मजदूर वर्ग अपने संघर्षो से उसे अर्जित करेगा लेनिन के ये विचार भारतीय परिस्थितियों पर भी आज पूरी तरह लागू होते हैं। पार्टी-गठन के कार्यभार को आज पार्टी-निर्माण के मातहत करना होगा। जनकार्यो में कार्यक्रम की अपनी समझ को लागू करते हुए आज मजदूर वर्ग में सर्वहारा राजनीति के व्यापक प्रचार और उद्वेलन का काम करना होगा और उनके बीच पार्टी 'भरती पर जोर देते हुए बोल्शेविक ढांचा संगठित करना होगा अनुभवों से सही सत्यापित लाइन अन्ततोगत्वा, मौजूदा क्रांतिकारी कतारों को अपने इर्द-गिर्द लामबन्द करने में सफल होगी।'

कितना अच्छा होता अगर आप अपनी 'जनकार्यो में कार्यक्रम की आपनी समझ' के प्रकाश से हमारे मस्तिश्क को भी आलोकित करते। जनकार्यो की आपकी `जिस समझ से सर्वभारतीय पार्टी का निर्माण होना है क्या वह कोई भूमिगत समझ है या समझ है ही नहीं?

अमूर्त जनकार्यो की समझ के साथ-साथ आप लेनिन का उद्धरण देकर क्या यही साबित करना चाहते हैं कि इस मामले में लेनिन बिल्कुल वैसा ही सोचते थे जैसा कि आप। हम आपसे कहना चाहते हैं कि पार्टी-गठन जैसे अहम मसले पर लेनिन इतने गैर लेनिनवादी नहीं हो सकते कि पार्टी-गठन व निर्माण को मजदूर संघर्षो द्वारा अर्जित करने पर छोड़ दें। जब आप सन्दर्भ से काटकर लेनिन के उद्धरण को प्रस्तुत करते हैं तब आप सचेत या अचेत तौर पर अपनी कतारों व आंदोलन को गुमराह करने की असफल कोशिश कर रहे हैं। 'एकता' शीर्षक से 1914 में लेनिन द्वारा लिख गया यह लेख उन 20 प्रतिशत वर्ग सचेत रूसी मजदूरों की सम्बोधित है जो बोल्शेविक पार्टी के अस्तित्वमान होने के बावजूद मेंशेविकों इत्यादि के प्रभाव में थे। बोल्शेविकों द्वारा अपनी अलग पार्टी बना लेने को मेंशेविकों व अन्य द्वारा फूटपरस्त बताने के प्रभाव में आ जाने वाले वर्ग सचेत मजदूरों को सम्बोधित इस लेख द्वारा लेनिन मेंशेविकों इत्यादि की एकता की चीख-पुकार का भण्डाफोड़ करते हैं। यह वह समय था जब बोल्शेविक मजदूरों की वास्तविक पार्टी के रूप में न सिर्फ खुद संगठित थे बल्कि 80 प्रतिशत वर्ग सचेत मजदूर (प्राव्दा के झंडे तले) गोलबंद भी थे । ऐसे में बोल्शेविक पार्टी के परचम्से बाहर 20 प्रतिशत वर्ग सचेत मजदूरों को एकता हासिल करनी थी तो उनके सामने एकमात्र रास्ता यही था कि उन्हें मेंशेविकों इत्यादि से संघर्ष करके ही इसे हासिल करना था। इसी तरह 80 प्रतिशत प्राव्दापंथी मजदूरों को भी शेष 20 प्रतिशत वर्ग सचेत मजदूरों व फूटपरस्त मेंशोविकों के साथ संघर्ष करके मजदूरों को एकता कायम करनी थी। बुद्धिजीवी ग्रुप मजदूरों को एकता नहीं दे सकते थे इस रूप में यह एकता मजदूरों को संघर्ष करके हासिल करनी थी।

1903 के पहले लेनिन यह बात नहीं कह सकते थे जब रूस में विभिन्न सामाजिक-जनवादी ग्रुपों द्वारा मजदूर आंदोलन से सम्पर्क कायम करने और आपसी एकता द्वारा अखिल रूसी पार्टी गठित करने का काल था। विभिन्न सामाजिक-जनवादी ग्रुपों के बीच विचारधारा, कार्यक्रम व

सांगठनिक लाइन के सवालों पर संघर्ष ही इस काल की विशिष्टता थी। जब आप अपनी कपोल-कल्पनाओं को लेनिन के शब्दों का जामा पहनाते हैं तो आप हास्यास्पद हो जाते हैं। आज न तो 80 प्रतिशत वर्ग सचेत मजदूर आपके 'भारतीय प्राव्दा' के साथ हैं न ही आप बोल्शेविक पार्टी की तरह पार्टी के रूप में संगठित हैं। आप शायद भूल जाते हैं कि आप अभी अपनी पहली कांफ्रेंस करने तक की स्थिति में नहीं हैं। और शायद अपना 2000 प्राव्दा खपाने के लिए भी आपको अक्सर नुक्कड़ सभाओं, बस-रेल यात्री सभाओं का सहारा लेना पड़ता है। तब आपके इस अनर्गल प्रलाप, वाहियात घोषणाओं और लेनिन की बातों से अर्थ का अनर्थ निकालने की वजह क्या है? वजह बहुत साफ है।

'क्रांतिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत' के निर्माण वर्ष 1990 से 2003 तक का काल इसके नेतृत्व द्वारा अपने क्रांतिकारी दायित्वों से मुंह चुराने का काल रहा है। इस दौरान शिविर के कुछ घटक संगठन दक्षिणपंथी रूझानों का शिकार होकर क्रांतिकारी शिविर से बाहर चले गये। कुछ दक्षिणपंथी रूझानों की ओर उन्मुख हैं। मगर अधिकांश संगठन विचारधारा, कार्यक्रम और सांगठनिक लाइन पर तुलनात्मक रूप से ज्यादा सकारात्मक दिशा की ओर बढ़े हैं। इस बीच कुछ पार्टी-संगठन टूट-फूट व बिखराव का शिकार हुए हैं तो कुछ ने पुनर्संगठन की दिशा में कदम बढ़ाते हुए एकता हासिल की है। मगर 'क्रांतिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत' ने न तो शिविर के दक्षिणपंथी भटकाव के शिकार संगठनों से कोई वाद-विवाद चलाया है। न ही पुनर्गठित हो रहे संगठनों की कोई आलोचना की, न ही इस प्रक्रिया का स्वागत किया। इस दौरान आप कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन के बीच घट रही परिघटनाओं के प्रति अपने दिमाग को सुन्न करके मुख्यतः साहित्यकर्म में ही तल्लीन रहे हैं। आपके पास पहले से मौजूद पार्टी- संगठन को भी आपने प्रकाशन व वितरण के कार्य में झोंके रखा है।

अब जब आंदोलन के विकासक्रम ने आपके समक्ष कई सवाल खड़े कर दिए हैं तब आप अपनी 'सांस्कृतिक पुनर्जागरण व प्रबोधन' की छापाखाना विस्तार योजना का मूल्यांकन करने व इस मौलिक थीसिस को आंदोलन की ओर से मिल रही चुनौतियों का सामना करने के बजाय अपनी जिम्मेदारियों से पल्ला झाड़ रहे हैं। ऐसा करने का नायाब नुस्खा भी आप अमल में ला चुके हैं। पार्टी-निर्माण व पार्टी-गठन के बारे में प्रस्थापनाओं का गर्द-गुबार खड़ा करके खुद को एकमात्र सर्वहारा पार्टी संगठन घोषित करना। ऐसा करके आप शिविर के समक्ष मौजूद चुनौतियों से भाग खड़े होना चाहते हैं वह भी सीना तानकर । आप अच्छी तरह जानते हैं कि सिर्फ ऐसा करके ही आप अपनी कतारों को साहित्य के सेल्समैन बनाकर इस झांसे में रख सकते हैं कि क्रांति का मूल कर्म यही है। लेकिन खुद के पुरस्कार वितरण समारोह में खुद को भारतीय सर्वहारा का एकमात्र प्रतिनिधि का तमगा लगाकर आप दूरगामी तौर पर अपने कार्यकताओं को झांसे में नहीं रख सकते। देर-सवेर आपकी कतारें खुद आपका यह तमगा नोंचकर आपको जमीन में खड़ा करेंगी।

अंत में.... आपने खुद अपने ही जिन राजनीतिक सूत्रीकरणों से बेवफाई कर दी है, वह शब्द हम आपको याद दिलाना चाहते हैं। उम्मीद है आप इन्हें पहचान जायेंगे।

> ''89 की फूट के दौरान 180 डिग्री पर पैंतरापलट करके रामनाथ ने हमारी अवस्थिति अपना ली और फिर हमारे विरूद्ध संघर्ष में दूसरे सिरे पर पहुंचकर **यह अवस्थिति अपना ली कि आज की परिस्थिति में विभिन्न ग्रुपों के साथ संवाद, विचार विनिमय और राजनीतिक वाद-विवाद (polemics) से फिलहाल कुछ विशेष नतीजा सामने नहीं**

आने वाला है, अंतः हमें अब सारी ताकत बुनियादी वर्गों को संगठित करने में लगा देनी होगी। हालांकि इसकी भी चर्चा हम आगे करेंगे कि बुनियादी वर्गों को संगठित करने की प्रक्रिया और जांच-पड़ताल के बारे में भी रामनाथ की पहुंच निहायत किताबी व अकादमिक है। पार्टीगठन और एकता की प्रक्रिया के बारे में विचार प्रकट करते हुए रामनाथ **अब स्वतःस्फूर्ततावादी एवं आंदोलनपंथी भटकाव के दलदल में जा फंसे है और अराजकतावादी संघाधिपत्यवाद का एक नया नमूना पेश करने लगे है''** (भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा-ले) में अक्टूबर-नवम्बर 90 में हुई फूट के कारणों का विश्लेषण व समाहार, केन्द्रीय सांगठनिक कोर (प्राविजनल) क्रांतिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत, पृष्ठ-40, जोर हमारा)

□□□□□